Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

झारखंड लोक सेवा आयोग (JPSC)

मध्यकालीन भारत

(झारखंड के विशेष संदर्भ सहित)

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: JHPM02

झारखंड लोक सेवा आयोग (JPSC)

मध्यकालीन भारत

(झारखंड के विशेष संदर्भ सहित)

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 87501 87501, 011-47532596
टोल फ्री : 1800-121-6260
Web : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

JPSC DLP विषय सूची (Contents)

1.	**मध्यकालीन भारतीय इतिहास के स्रोत**	**5–14**
	1.1 सल्तनतकालीन प्रमुख ऐतिहासिक स्रोत	5
	1.2 मुगलकालीन प्रमुख ऐतिहासिक स्रोत	9
2.	**अरबों एवं तुर्कों का आक्रमण**	**15–22**
	2.1 भारत पर अरबों का आक्रमण	15
	2.2 तुर्क आक्रमणों से पूर्व भारत की राजनीतिक स्थिति	17
	2.3 महमूद गज़नवी का आक्रमण	19
	2.4 मुहम्मद गोरी का आक्रमण	20
3.	**दिल्ली सल्तनत**	**23–72**
	3.1 गुलाम वंश	23
	3.2 खिलजी वंश	28
	3.3 तुगलक वंश	36
	3.4 सैयद वंश	46
	3.5 लोदी वंश	47
	3.6 सल्तनतकालीन प्रशासन	52
	3.7 सल्तनतकालीन सामाजिक और आर्थिक जीवन	61
	3.8 सल्तनतकालीन कला एवं स्थापत्य	65
4.	**विजयनगर एवं बहमनी साम्राज्य**	**73–87**
	4.1 विजयनगर : राजनीतिक एवं प्रशासनिक स्थिति	73
	4.2 विजयनगर : सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति	79
	4.3 बहमनी साम्राज्य	82
	4.4 बहमनी : प्रशासनिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सैन्य स्थिति	85
5.	**क्षेत्रीय शक्तियाँ : 13वीं-15वीं सदी**	**88–94**

6. भक्ति एवं सूफी आंदोलन **95–108**

6.1 भक्ति आंदोलन 95

6.2 सूफी आंदोलन 103

7. नई इस्लामिक संस्कृति का आगमन **109–125**

7.1 इंडो-इस्लामिक वास्तुकला 109

7.2 हिन्दी एवं उर्दू भाषाओं का विकास 123

8. मुगल साम्राज्य **126–175**

8.1 बाबर (1526-1530 ई.) 126

8.2 हुमायूँ (1530-1556 ई.) 127

8.3 शेरशाह : प्रशासक एवं सुधारक 129

8.4 अकबर : मुगल साम्राज्य का सुदृढ़ीकरण और विस्तार 132

8.5 जहाँगीर (1605-1627 ई.) 137

8.6 शाहजहाँ (1627-1658 ई.) 138

8.7 औरंगज़ेब (1658-1707 ई.) 141

8.8 उत्तर-मुगलकालीन शासक 144

8.9 मुगलकालीन प्रशासन और भू-राजस्व व्यवस्था 148

8.10 मुगलकालीन स्थापत्य एवं कला 160

8.11 मुगलकालीन समाज 169

8.12 18वीं सदी में क्षेत्रीय राज्यों का उदय 170

8.13 सिक्ख समुदाय एवं खालसा पंथ का विकास 171

8.14 मुगल साम्राज्य में झारखंड 172

9. मराठा साम्राज्य **176–188**

9.1 उदय के कारण 176

9.2 शिवाजी की उपलब्धियाँ 177

9.3 मुगल-मराठा संघर्ष 180

9.4 मराठों का उत्तर की ओर विस्तार और उसका पतन 182

9.5 शिवाजी के उत्तराधिकारी 185

अध्याय
1

मध्यकालीन भारतीय इतिहास के स्रोत
(Sources of Medieval Indian History)

प्राचीन भारतीय इतिहास की तुलना में मध्यकालीन भारतीय इतिहास से संबंधित ऐतिहासिक सामग्री प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। इसका मुख्य कारण प्राचीन काल में ऐतिहासिक ग्रंथों का अभाव या फिर उनकी उपलब्धता की कमी है। मध्यकालीन भारतीय इतिहास जानने के लिये ऐतिहासिक स्रोतों की कमी नहीं है। इतिहास लेखन में मुस्लिम सुल्तान और उलेमा रुचि रखते थे। मुस्लिम इतिहासकारों ने सुल्तान और उनकी भारतीय विजयों का विस्तृत विवरण दिया है। साहित्यिक स्रोतों के अतिरिक्त मध्यकालीन भारत में विदेशी यात्रियों के यात्रा वृत्तांत, शिक्षित सुल्तानों की आत्मकथा, विजय अभियानों के बाद स्थापित विजय स्मारक, विजय स्तंभ आदि ऐतिहासिक स्रोतों से भी पर्याप्त जानकारी मिलती है।

सल्तनत काल में फारसी और अरबी पुस्तकों की रचना की गई। हालाँकि, इनके लेखकों को हम वैज्ञानिक इतिहासकारों की श्रेणी में नहीं रख सकते, क्योंकि वे केवल तात्कालिक शासकों के कार्यकलापों तक ही सीमित थे, परंतु इन रचनाओं से सल्तनतकालीन इतिहास और कालक्रम की पर्याप्त जानकारी मिलती है।

1.1 सल्तनतकालीन प्रमुख ऐतिहासिक स्रोत
(Major Historical Sources of Sultanate Period)

साहित्यिक साक्ष्य *(Literary Evidence)*

फारसी तथा अरबी साहित्य

तुर्क-अफगान शासक मूलत: सैनिक थे और स्वयं शिक्षित नहीं थे। हालाँकि उन्होंने इस्लामी विधाओं और कलाओं को प्रोत्साहन दिया। प्रत्येक सुल्तान के दरबार में फारसी लेखकों, विद्वानों तथा कवियों का जमावड़ा लगा रहता था। उनकी रचनाओं से उस काल के इतिहास की महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ मिलती हैं। इनका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है:

किताब-उल-हिंद

- इस पुस्तक की रचना अलबरूनी द्वारा की गई। वह महमूद गज़नवी के आक्रमण के समय भारत आया था। वह अरबी और फारसी भाषा का ज्ञाता था।
- अपनी इस पुस्तक में उसने 11वीं शताब्दी के प्रारंभ में हिंदुओं के साहित्य, विज्ञान तथा धर्म का आँखों देखा सजीव वर्णन किया है। इस पुस्तक के अध्ययन से तात्कालिक सामाजिक दशा का पर्याप्त ज्ञान होता है। यह पुस्तक 'किताब-उल-हिंद' के नाम से भी प्रसिद्ध है।

चचनामा

- यह अरबी भाषा में लिखी गई है। मुहम्मद अली-बिन-अबूबकर कुफी ने नासिरुद्दीन कुवाचा के समय में इसका फारसी में अनुवाद किया।
- 'चचनामा' अरबों की सिंध-विजय की जानकारी का मूल स्रोत है।

ताज़-उल-मासिर

- इसकी रचना हसन निज़ामी द्वारा की गई। इस पुस्तक में 1192 ई. से 1229 ई. तक के भारत की घटनाओं का विवरण दिया गया है। इसमें राजनीतिक घटनाओं के साथ-साथ सामाजिक तथा धार्मिक जीवन का उल्लेख भी किया गया है। दिल्ली सल्तनत के प्रारंभिक दिनों के प्रामाणिक इतिहास की जानकारी इस पुस्तक में पर्याप्त रूप से मिलती है।
- यह अरबी एवं फारसी दोनों भाषाओं में लिखी गई है।
- हसन निज़ामी कुतुबुद्दीन ऐबक के समकालीन थे।

खज़ायन-उल-फुतूह	अमीर खुसरो	अलाउद्दीन ख़िलजी के विजयों का वर्णन है।
तुगलकनामा	अमीर खुसरो	तुगलक वंश के सत्तारूढ़ होने की घटनाओं का वर्णन है।
नूह सिपिहर	अमीर खुसरो	भारत की जलवायु, रहन-सहन, कृषि, वेशभूषा आदि का वर्णन है।
फुतूह-उस-सलातीन	इसामी	गज़नी राज्य के उदय से लेकर बहमनी राज्य की संस्थापना तक की घटनाओं का वर्णन है।
फतवा-ए-जहाँदारी	ज़ियाउद्दीन बरनी	इसमें सल्तनतकालीन राजनीतिक दर्शन और प्रशासन का उल्लेख है।
किताब-उल-रेहला	इब्नबतूता (मोरक्कन अफ्रीकी)	मुहम्मद बिन तुगलक के व्यक्तिगत जीवन, प्रशासन, सामाजिक जीवन आदि का उल्लेख है।
तारीख-ए-शेरशाही	अब्बास खाँ शेरवानी	अकबर के आदेश पर उसी के दरबार में लिखी गई। शेरशाह के शासन और प्रशासनिक कार्यों की जानकारी का यह सबसे महत्त्वपूर्ण स्रोत है।
अकबरनामा	अबुल फज़ल	यह तीन भाग में है। प्रथम भाग में अकबर के पूर्वगामी शासकों का इतिहास एवं दूसरे भाग में अकबर के शासनकाल की प्रमुख घटनाओं का वर्णन है तथा तीसरा भाग 'आईन-ए-अकबरी' कहलाता है, जिसमें अकबर द्वारा प्रतिपादित शासन प्रणाली, कानून, नियम आदि की जानकारी है।
पादशाहनामा	मुहम्मद अमीन काज़विनी, अब्दुल हामिद लाहौरी तथा मुहम्मद वारिस	शाहजहाँ के काल का इतिहास। मुहम्मद अमीन काज़विनी ने शाहजहाँ के प्रथम 10 वर्षों का इतिहास लिखा, उसके पश्चात् अगले दस वर्षों का वर्णन **अब्दुल हामिद लाहौरी** ने किया तथा मुहम्मद वारिस ने शाहजहाँ के संयुक्त इतिहास का वर्णन किया, परंतु बीस वर्षों के बाद का इतिहास उसने स्वतंत्र होकर लिखा।
नुस्खा-ए-दिलकुशा	भीमसेन	औरंगज़ेबकालीन दक्षिण भारत के इतिहास का वर्णन तथा मुगल-मराठा संघर्ष का उल्लेख।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण तथ्य

- पूर्व मध्यकाल में अरबों द्वारा विजय का विस्तृत विवरण **चचनामा** नामक ग्रंथ में मिलता है। इसमें मुहम्मद बिन कासिम के भारत अभियान की चर्चा की गई है। इसके लेखक अज्ञात हैं तथा यह **अरबी** भाषा में लिखा गया है।
- अलबरूनी 11वीं शताब्दी में कई वर्षों तक भारत में रहा। उसकी कृति **किताब-उल-हिंद (अरबी भाषा)** है, जिसमें तत्कालीन भारत की सामाजिक-सांस्कृतिक स्थिति की जानकारी मिलती है। पुराणों का अध्ययन करने वाला प्रथम मुसलमान भी अलबरूनी ही था।
- **शाहनामा** फारसी भाषा का एक महाग्रंथ है जिसकी रचना **फिरदौसी** ने की थी। वह महमूद गज़नवी के दरबार से संबंधित था।
- **ताज-उल-मासिर** की रचना हसन निजामी के द्वारा फारसी भाषा में की गई थी। दिल्ली सल्तनत के प्रारंभिक दिनों का प्रामाणिक इतिहास इस पुस्तक में पर्याप्त रूप से मिलता है।
- **अमीर खुसरो** फारसी भाषा का भारतीयकरण करने वाला प्रथम कवि था। इन्हें **हिन्दोस्तान का तोता** भी कहा जाता है।
- **खज़ायन-उल-फुतूह, नूह सिपिहर, तुगलकनामा** व **किरान-उस-सादेन** आदि रचनाएँ अमीर खुसरो की हैं। उसने नूह सिपिहर में भारतीय पर्यावरण का सुंदर चित्रण किया है।
- **हुमायूँनामा** की रचना **गुलबदन बेगम** ने अकबर के अनुरोध पर की थी।

- **तारीख-ए-फिरोज़शाही** ज़ियाउद्दीन बरनी की कृति है। इसमें बलबन के सिंहासनारोहण से लेकर फिरोज़शाह तुगलक के शासनकाल के छठे वर्ष तक की घटना का वर्णन है।
- **शम्स-ए-सिराज** ने भी तारीख-ए-फिरोज़शाही नामक ग्रंथ की रचना की। इसे सुल्तान फिरोज़शाह तुगलक का संरक्षण प्राप्त था।
- फिरोज़शाह तुगलक ने अपनी आत्मकथा **फुतूहात-ए-फिरोज़शाही** की रचना की। इसमें उसके द्वारा इस्लाम धर्म के प्रसार के लिये किये गए कार्यों का वर्णन है।
- सल्तनतकालीन डाक व्यवस्था का विस्तृत विवरण मोरक्को यात्री **इब्नबतूता** ने अपने यात्रा वृत्तांत **रेहला** (अरबी भाषा में लिखा गया है) में दिया है।
- सदरुद्दीन मुहम्मद 'औफी' का बुखारा में जन्म हुआ। वह इल्तुतमिश के शासनकाल से संबंधित थे। इन्होंने ही सर्वप्रथम भारतीय महासागरों में प्रयोग होने वाले चुंबकीय दिशासूचक की प्रारंभिक सूचना दी थी।
- **तारीख-ए-सलातीन-ए-अफगान** की रचना अहमद यादगार द्वारा लिखी गई है। इसमें लोदी वंश के शासनकाल के इतिहास की पर्याप्त जानकारी मिलती है।
- इसामी के ग्रंथ **फुतूह-उल-सलातीन** से भारत में **चरखे** के प्रयोग का आरंभिक साक्ष्य प्राप्त होता है।
- **निकोली डी कॉण्टी** इटली का रहने वाला था। इसने देवराय प्रथम के शासनकाल में विजयनगर साम्राज्य का दौरा किया था। वहीं अब्दुर्रज़्ज़ाक, देवराय द्वितीय के शासनकाल में फारस के तैमूर राजवंश के शासक शाहरुख का दूत बनकर आया था।
- 'बारहमासा' की रचना मलिक मुहम्मद जायसी के द्वारा की गई।
- बाबरनामा तुर्की भाषा में रचित बाबर की आत्मकथा है। इसका अंग्रेज़ी अनुवाद मैडम बैवरीज ने किया था।
- अकबरनामा के लेखक अबुल फज़ल हैं। अकबरनामा को तीन जिल्दों में विभाजित किया गया है जिनमें से तीसरी जिल्द आईन-ए-अकबरी है।
- गुलबदन बेगम बाबर की पुत्री थी। उसने अपनी प्रसिद्ध रचना **हुमायूँनामा** में ऐतिहासिक विवरण लिखे। हुमायूँनामा के नाम से ही एक अन्य ग्रंथ की रचना **ख्वांदमीर** ने की है।
- **अब्दुल हमीद लाहौरी** की **पादशाहनामा** व **मुहम्मद काज़िम** की कृति **आलमगीरनामा** अन्य महत्त्वपूर्ण मुगल साहित्यिक स्रोत हैं।
- **मुंतखाब-उल-लुबाब** की रचना **खफी खाँ** ने की थी। इसमें औरंगज़ेबकालीन इतिहास पर प्रकाश डाला गया है।
- मुगलकाल में कुछ महत्त्वपूर्ण संस्कृत ग्रंथ भी लिखे गए जिनमें **पं. जगन्नाथ** का **गंगालहरी** प्रमुख है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. 'हुमायूँनामा' की रचना किसने की?
6th JPSC (Mains)
(a) बदायूँ (b) अबुल फज़ल
(c) अहमद यादगार (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

2. चुंबकीय दिशासूचक के भारतीय महासागरों में प्रयोग की प्रारंभिक सूचना किसके द्वारा दी गई?
6th JPSC (Pre)
(a) मार्कोपोलो
(b) इब्नबतूता
(c) सदरुद्दीन मुहम्मद 'औफी'
(d) निकोलो कोंटी

3. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिये तथा नीचे दिये गए कूट से सही उत्तर चुनिये:

सूची-I	सूची-II
A. भीमसेन कायस्थ	1. चहार चमन
B. चंद्रभान ब्राह्मण	2. फुतूहात-ए-आलमगीरी
C. ईश्वरदास नागर	3. खुलासत-उत-तवारीख
D. सुजानराय भंडारी	4. तारीख-ए-दिलकुशा

कूट:

	A	B	C	D
(a)	1	2	3	4
(b)	2	3	4	1
(c)	3	4	1	2
(d)	4	1	2	3

4. निम्नलिखित में से कौन फारसी का प्रथम कवि था जिसने अपनी कविता में भारतीय पर्यावरण को चित्रित किया?
   (a) अमीर खुसरो (b) अमीर हसन
   (c) अबूतालिब कलीम (d) फैजी
5. अलबरूनी किस आक्रमणकारी के साथ भारत आया था?
   (a) मुहम्मद बिन कासिम (b) महमूद गज़नवी
   (c) मुहम्मद गोरी (d) बाबर
6. निम्नलिखित में से किसने स्वयं को 'हिन्दोस्तान का तोता' कहा?
   (a) कुतुबन (b) उस्मान
   (c) अमीर खुसरो (d) अमीर हसन
7. 'तुज़ुक-ए-बाबरी' किस भाषा में लिखा गया था?
   (a) फारसी (b) अरबी
   (c) तुर्की (d) उर्दू
8. 'तबकात-ए-नासिरी' का लेखक कौन था?
   (a) शेख जमालुद्दीन
   (b) अलबरूनी
   (c) मिनहाज-उस-सिराज
   (d) ज़ियाउद्दीन बरनी
9. 'हुमायूँनामा' की रचना किसने की थी?
   (a) बाबर (b) हुमायूँ
   (c) गुलबदन बेगम (d) जहाँगीर
10. 'बारहमासा' की रचना किसने की?
   (a) अमीर खुसरो
   (b) इसामी
   (c) मलिक मुहम्मद जायसी
   (d) रसखान
11. 'हुमायूँनामा' की रचना गुलबदन बेगम ने किसके आग्रह पर की थी?
   (a) हुमायूँ (b) बाबर
   (c) मुहम्मद हैदर (d) अकबर
12. 'शाहनामा' का लेखक कौन था?
   (a) उत्बी (b) फिरदौसी
   (c) अलबरूनी (d) बरनी
13. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना अमीर खुसरो की **नहीं** है?
   (a) तुगलकनामा (b) खज़ायन-उल-फुतूह
   (c) नूह सिपिहर (d) रेहला
14. अमीर खुसरो निम्नलिखित में से किसके शासनकाल से संबंधित थे?
   (a) अलाउद्दीन खिलजी (b) इल्तुतमिश
   (c) इब्राहीम लोदी (d) फिरोज़शाह तुगलक
15. निम्नलिखित में से कौन प्रसिद्ध ग्रंथ 'किताब-उल-हिंद' के लेखक हैं?
   (a) हसन निज़ामी (b) ज़ियाउद्दीन बरनी
   (c) अलबरूनी (d) मिनहाज-उस-सिराज

उत्तरमाला

1. (d) 2. (c) 3. (d) 4. (a) 5. (b) 6. (c) 7. (c) 8. (c) 9. (c) 10. (c)
11. (d) 12. (b) 13. (d) 14. (a) 15. (c)

अध्याय
2

अरबों एवं तुर्कों का आक्रमण (Invasion of Arabs and Turks)

अरब एवं बाद में तुर्कों द्वारा भारत पर आक्रमण भारतीय इतिहास की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ हैं। अरबों द्वारा धन की लूट के लिये सिंध एवं इसके आस-पास के क्षेत्रों में आक्रमण किये गए। भारत पर सर्वप्रथम मुस्लिम आक्रमण 711ई. में उबैदुल्लाह के नेतृत्व में हुआ। इसके बाद 711 ई. में ही बुदैल के नेतृत्व में दूसरा आक्रमण हुआ। यद्यपि ये दोनों ही आक्रमण असफल हुए तथापि अरब आक्रमण रुका नहीं।

2.1 भारत पर अरबों का आक्रमण *(The Arabs Invasion on India)*

भारत और अरब के बीच 7वीं सदी से ही संपर्क आरंभ हो गए थे, लेकिन राजनीतिक संबंध 712 ई. में सिंध पर आक्रमण के दौरान स्थापित हुआ। भारत में अरबों के आगमन का राजनीतिक दृष्टि से उतना महत्त्व नहीं है, जितना अन्य पक्षों का है। अरब आक्रमणकारी भारत में उस प्रकार का साम्राज्य नहीं बना पाए जैसा कि उन्होंने एशिया, अफ्रीका और यूरोप के विभिन्न भागों में बनाया था। यहाँ तक कि सिंध में भी उनकी शक्ति अधिक दिनों तक नहीं बनी रही। किंतु दीर्घकालिक परिणामों की दृष्टि से प्रतीत होता है कि अरबों ने भारतीय जनजीवन को अत्यधिक प्रभावित किया और स्वयं भी भारतीय जीवन से प्रभावित हुए।

यद्यपि इससे पूर्व में भी भारत पर शक, यवन, कुषाण, हूण आदि के आक्रमण हुए थे, किंतु भारतीय संस्कृति को उन्होंने आत्मसात कर लिया। उन्होंने भारतीय धर्म तथा सामाजिक आचार-विचारों को ग्रहण किया और अपनी विशिष्टता खो बैठे। उनका एक-दूसरे के ऊपर प्रभाव भी पड़ा, तथापि हिन्दू तथा मुसलमान दोनों ही भारतीय समाज में अपनी विशिष्ट संस्कृतियों के साथ विद्यमान रहे।

अरबों ने चिकित्सा, दर्शनशास्त्र, नक्षत्र विज्ञान, गणित और शासन प्रबंध की शिक्षा भारतीयों से ली। ब्रह्मगुप्त की पुस्तकों का अलफ़जारी ने अरबी में अनुवाद किया। अलबरूनी कहता है कि पंचतंत्र का अनुवाद भी अरबी में हो चुका था। सूफी धार्मिक संप्रदाय का उद्भव स्थल सिंध ही था, जहाँ अरब लोग रहते थे। सूफी मत पर बौद्ध धर्म का प्रभाव देखा जा सकता है। दशमलव प्रणाली अरबों ने 9वीं सदी में भारत से ही ग्रहण की थी।

यदि तात्कालिक राजनीतिक दृष्टि से देखा जाए तो कहा जा सकता है कि अरबों ने एक ऐसी चुनौती पेश की जिसका सामना करने के लिये ऐसी शक्तियाँ उदित हुईं, जो भारत में आगामी तीन सौ वर्षों तक बनी रहीं। गुर्जर-प्रतिहार, राष्ट्रकूट, चालुक्यों की प्रतिष्ठा की स्थापना उनके द्वारा अरबों का विरोध करने के कारण हुई। अरबों का दीर्घकालिक महत्त्व यह था कि उन्होंने भारत में धर्म राज्य की स्थापना न करके धार्मिक सहिष्णुता का प्रदर्शन किया। हालाँकि, जज़िया (जिज़िया) कर लिया जाता था।

अरबों का भारत आगमन का आर्थिक महत्त्व व्यापार के क्षेत्र में देखा जा सकता है। अरब व्यापारियों के समुद्री एकाधिकार के साथ भारतीय व्यापारियों ने तालमेल बनाया और पश्चिमी जगत एवं अफ्रीकी देशों में अपनी व्यापारिक गतिविधियों को गतिशील बनाए रखा।

अरबों के संपर्क में आने से भारतीय समाज में बहुत परिवर्तन परिलक्षित हुए, जैसे-

- कुलीन हिन्दुओं ने मुसलमानों के समान पोशाक पहनना आरंभ कर दिया, जैसे- लंबी बाँहों वाला कुर्ता-पायजामा आदि।
- हिन्दू समाज में मद्यपान तथा माँसाहार का प्रचलन अधिक बढ़ गया।
- दरबारी शिष्टाचार अपनाना।

यद्यपि हिन्दुओं ने अपनी जातीय शुद्धता बनाए रखने के लिये नियमों को अत्यधिक कठोर बना दिया, जैसे- अंतर्जातीय विवाह को प्रतिबंधित करना, बाल विवाह व पर्दा प्रथा का प्रचलन, स्त्रियों की स्वतंत्रता की समाप्ति, राजपूत समाज में जौहर प्रथा आदि।

अध्याय
3

दिल्ली सल्तनत
(Delhi Sultanate)

1206 ई. में मुहम्मद गोरी की मृत्यु के पश्चात् इसके संतानहीन होने के कारण उसके साम्राज्य को उसके तीन गुलामों ने आपस में बाँट लिया। इसमें यल्दौज को गज़नी का राज्य क्षेत्र, कुबाचा को सिंध और मुल्तान तथा कुतुबुद्दीन ऐबक को भारतीय राज्य क्षेत्रों पर अधिकार मिला। गोरी के विश्वस्त गुलाम ऐबक ने तराइन के युद्ध के पश्चात् भारत में राज्य विस्तार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। कुतुबुद्दीन ऐबक ने जिस वंश की नींव रखी, इसे मामलूक या गुलाम वंश कहते है, क्योंकि वह मुहम्मद गोरी द्वारा खरीदा हुआ गुलाम था।

3.1 गुलाम वंश *(Slave Dynasty)*

मुहम्मद गोरी की मृत्यु के पश्चात् तुर्कों द्वारा भारत के विजित क्षेत्रों पर तुर्की शासन की स्थापना की गई और इस क्षेत्र का प्रथम शासक कुतुबुद्दीन ऐबक बना। 1206 ई. में भारत में तुर्की शासन की स्थापना हुई और 1290 ई. तक उत्तरी भारत में तुर्क सत्ता का आधार मज़बूत हो चुका था। 1206 से 1290 ई. के मध्य इस वंश में अनेक शासक हुए, जिनमें प्रमुख शासक कुतुबुद्दीन ऐबक, इल्तुतमिश, रज़िया सुल्तान और बलबन थे, जिन्होंने तुर्क सत्ता का सुदृढ़ीकरण किया। मामलूक वंश के शासकों का क्रम निम्नलिखित है–

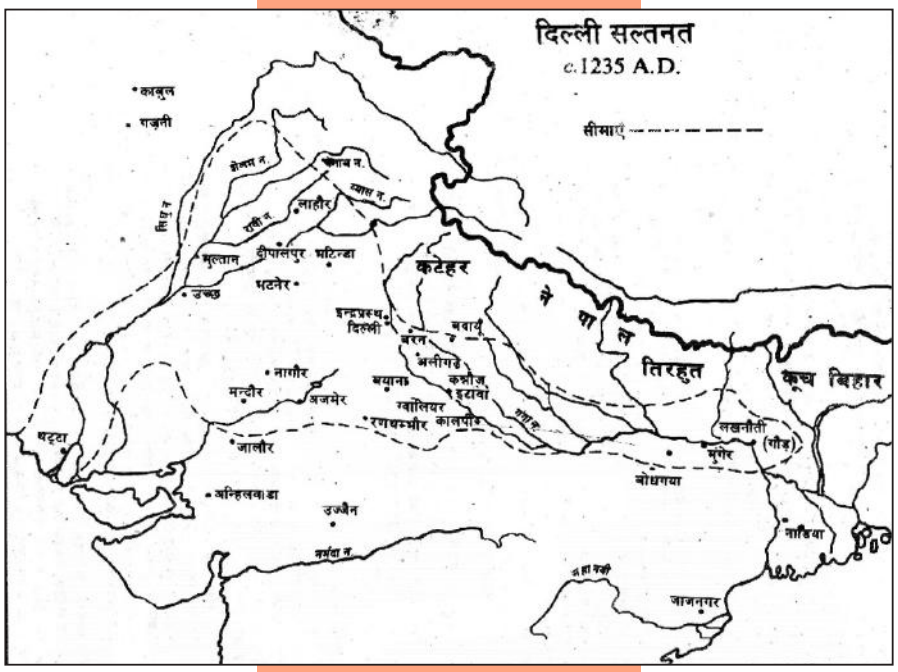

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210 ई.) *[Qutubuddin Aibak (1206-1210 AD)]*

मुहम्मद गोरी की मृत्यु के पश्चात् ऐबक को उत्तरी भारत का विजित क्षेत्र प्राप्त हुआ था। यह एक विस्तृत क्षेत्र था, जिसमें सियालकोट, लाहौर, अजमेर, झाँसी, दिल्ली, मेरठ, कोल (अलीगढ़), कन्नौज, बनारस, बिहार तथा लखनौती के क्षेत्र सम्मिलित थे। ऐबक को सिंध और मुल्तान छोड़कर मुहम्मद गोरी द्वारा विजित उत्तर भारत का संपूर्ण क्षेत्र प्राप्त हुआ था। इस विशाल क्षेत्र के साथ उसे उत्तराधिकार के रूप में अनेक चुनौतियाँ भी मिली थीं, जिन्हें अपने अल्प शासनकाल में उसने समझदारीपूर्वक निपटाया और नव गठित राज्य को युद्ध की विभीषिका से बचाए रखा।

अध्याय
4

विजयनगर एवं बहमनी साम्राज्य
(Vijayanagara and Bahmani Empire)

मुहम्मद तुगलक के शासनकाल में हुए विद्रोहों के फलस्वरूप अनेक क्षेत्रीय राजवंशों का उदय हआ। दक्षिण में विजयनगर और बहमनी राज्य की स्थापना भी मुहम्मद तुगलक के समय में ही हुई थी। जिस समय उत्तर भारत में विघटनकारी शक्तियाँ प्रबल होकर अव्यवस्था फैला रही थीं, ठीक उसी समय दक्षिण भारत में विजयनगर एवं बहमनी राज्यों के शासकों द्वारा स्थायित्व तथा प्रजा के कल्याण के लिये अनेक सामाजिक–सांस्कृतिक उपाय किये गए। इन दोनों राजवंशों में आपसी संघर्ष चलता रहा, जब तक कि बहमनी राज्य का विघटन नहीं हुआ। दक्षिण भारत में इन दोनों वंशों के शासकों का इतिहास अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

4.1 विजयनगर : राजनीतिक एवं प्रशासनिक स्थिति
(Vijayanagara : Political and Administrative Status)

विजयनगर राज्य की स्थापना हरिहर और बुक्का नाम के दो भाइयों के द्वारा 1336 ई. में की गई थी। कहा जाता है कि **हरिहर** और **बुक्का** वारंगल के काकतीय शासक प्रताप रुद्रदेव के पारिवारिक संबंधी या सामंत थे। तुगलकों ने वारंगल पर आक्रमण कर राज्य को नष्ट कर दिया, तब दोनों भाई (हरिहर और बुक्का) **कांपिली** अथवा **अनेगोंडी** (वर्तमान कर्नाटक) राज्य में जाकर रहने लगे। एक विद्रोही को शरण देने के कारण कांपिली पर मुहम्मद तुगलक ने आक्रमण कर दिया तथा विजयोपरान्त हरिहर और बुक्का को बंदी बना लिया गया। इन दोनों को इस्लाम धर्म स्वीकार करने के लिये विवश किया गया। उसके उपरांत इन्हें विद्रोहियों के दमन के लिये दक्षिण भारत भेजा गया, परंतु दोनों भाइयों ने दक्षिण भारत में प्रारंभ हुई तुर्क सत्ता के विरोधी गतिविधियों में योगदान दिया तथा इस्लाम धर्म को त्यागकर शृंगेरी के प्रतिष्ठित गुरु **विद्यारण्य** की प्रेरणा से पुनः हिंदू धर्म स्वीकार कर तुंगभद्रा नदी के किनारे सामरिक रूप से महत्त्वपूर्ण स्थान को विजयनगर के नाम से बसाया और शासन करने लगे। 1336 ई. में हरिहर विजयनगर का शासक बना। हरिहर और बुक्का द्वारा स्थापित वंश को उनके पिता संगम के नाम पर **संगम वंश** कहा गया।

प्रमुख राजवंश *(Major Dynasty)*

राजवंश	संस्थापक	शासनकाल
संगम वंश	हरिहर एवं बुक्का	1336–1485 ई.
सालुव वंश	नरसिंह सालुव	1485–1505 ई.
तुलुव वंश	वीर नरसिंह	1505–1570 ई.
अरावीडु वंश	तिरुमल्ल	1570–1652 ई.

संगम वंश (1336-1485 ई.) *[Sangama Dynasty(1336–1485 AD)]*

हरिहर प्रथम (1336-1356 ई.)

विजयनगर साम्राज्य के संस्थापकों में से एक, हरिहर प्रथम 1336 ई. में शासक बना। उसने प्रारंभ में अनेगोण्डी को अपनी राजधानी बनाया, परंतु बाद में साम्राज्य की राजधानी विजयनगर स्थानांतरित कर दी। उसने 1346 ई. में होयसल साम्राज्य को जीत कर उसे विजयनगर में शामिल कर लिया। सन् 1352–53 में मदुरै पर भी विजय प्राप्त कर ली।

अध्याय
5

क्षेत्रीय शक्तियाँ : 13वीं-15वीं सदी
(Regional Powers : 13th-15th Century)

तैमूर के आक्रमण (1398-99 ई.) ने तुगलक राजवंश के पतन और दिल्ली सल्तनत के अंत की प्रक्रिया को तीव्र कर दिया। तुगलक साम्राज्य के विघटन के पश्चात् उत्तर भारत में केंद्रीय सत्ता लुप्त हो गई और इस विघटित साम्राज्य के अवशेषों पर क्षेत्रीय राज्यों का उद्भव हुआ और इन राज्यों ने अपने नेतृत्व को स्थापित करने में सफलता प्राप्त की। 1300 ई. से 1500 ई. के दौरान मध्य तथा पूर्वी भारत में दो प्रकार के राज्यों का उदय हुआ–

(अ) प्रथम राज्य वे थे जिनका उदय एवं विकास सल्तनत से स्वतंत्र होकर हुआ, जैसे– असम एवं उड़ीसा के राज्य।

(ब) बंगाल, जौनपुर एवं मालवा जैसे राज्य, जो अपने अस्तित्व के लिये सल्तनत के ऋणी थे।

यद्यपि ये सभी राज्य निरंतर एक-दूसरे के साथ संघर्षरत रहा करते थे। इन संघर्षों में कुलीन वर्गों, अमीरों या राजाओं तथा स्थानीय अभिजात वर्गों ने निर्णायक भूमिका अदा की। विभिन्न अफगान शासक वंशों के मध्य भी संघर्ष हुआ, जैसे– दिल्ली सल्तनत एवं जौनपुर, दिल्ली सल्तनत एवं बंगाल आदि। दक्षिण में विजयनगर और बहमनी राज्य के बीच भी संघर्ष होता रहा।

गुजरात *(Gujrat)*

पश्चिमोत्तर भारत में अवस्थित गुजरात एक महत्त्वपूर्ण प्रांत था। सुल्तान **अलाउद्दीन खिलजी** ने 1297 ई. में गुजरात के राजपूत शासक **रायकरण** को पराजित कर गुजरात को दिल्ली सल्तनत में मिला लिया था। 1391 ई. से ही सूबेदार **जफर खाँ** व्यावहारिक रूप से स्वतंत्र शासन कर रहा था और 1401 ई. में उसने औपचारिक रूप से सल्तनत की अधीनता अस्वीकार करते हुए स्वतंत्र गुजरात राज्य की स्थापना की।

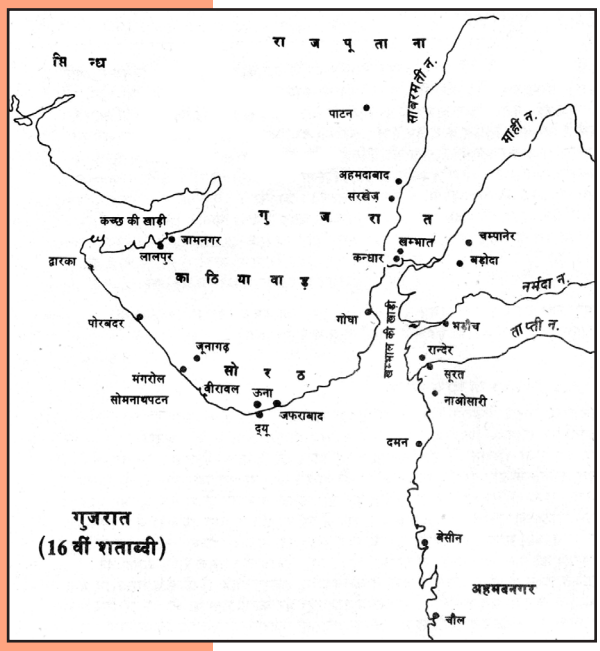

- 1407 ई. में ज़फर खाँ ने 'सुल्तान मुज़फ्फरशाह' की उपाधि धारण की।
- मुज़फ्फरशाह के पौत्र **अहमदशाह प्रथम** (1411-1441 ई.) को गुजरात राज्य का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। उसने ही मालवा के शासक हुशंगशाह को पराजित किया तथा साबरमती नदी के किनारे **अहमदाबाद** नगर की स्थापना कर उसे साम्राज्य की राजधानी बनाया।
- वह धार्मिक रूप से असहिष्णु शासक था। उसने **सिद्धपुर के मंदिरों** का विनाश किया, हिंदुओं पर **जज़िया (जिज़िया) कर** लगाया तथा अहमदाबाद में प्रसिद्ध **जामा मस्जिद** का निर्माण करवाया।
- **महमूद बेगड़ा** (1459-1511 ई.) गुजरात के शासकों में सबसे योग्य एवं शक्तिशाली शासक था। उसका शासनकाल भारत में **क्रोस और क्रेसेंट** के बीच युद्ध के लिये स्मरणीय है।
- उसने गुजरात के गिरनार एवं चांपानेर पहाड़ी क्षेत्र को जीत लिया था जिसके कारण उसे **बेगड़ा** की उपाधि दी गई थी। इन पहाड़ियों की तलहटी में उसने **मुस्तफाबाद** नामक नगर की स्थापना की।

अध्याय
6

भक्ति एवं सूफी आंदोलन (Bhakti and Sufi Movement)

मध्यकाल के प्रारंभ में ही हिन्दू तथा इस्लाम धर्म में आंदोलनों का उदय हुआ था, जिन्हें भक्ति एवं सूफी मत के नाम से कालांतर में जाना गया। भक्ति आंदोलन का प्रारंभ उपनिषदों, भगवद्गीता, भागवत पुराण आदि धार्मिक ग्रंथों के आधार पर हुआ। तुर्की शासन में जब जनजीवन में घुटन तथा उदासी व्याप्त थी, तब सूफी संतों ने सामाजिक बुराइयों को दूर करने तथा प्रेम व उदारता के संदेश दिये। प्रेम, उदारता और सद्भाव ही इन आंदोलनों के मूल आधार थे तथा दोनों ही लोकतांत्रिक आंदोलन थे।

इन आंदोलनों को न तो कोई राजकीय संरक्षण मिला और न ही राजनीतिक उतार-चढ़ाव से इसमें कोई विचलन आया। इन दोनों मतों की मुख्य विशेषता यह थी कि इन्होंने कर्मकांड, जातिवाद, घृणा तथा सांप्रदायिकता जैसी बुराइयों की आलोचना की और समाज की नैतिक प्रगति में सहयोग दिया।

6.1 भक्ति आंदोलन *(Bhakti Movement)*

भक्ति आंदोलन के कारण

आंदोलन पर इस्लाम का प्रभाव

सल्तनतकाल में हिंदुओं के प्रति अपनाई गई धार्मिक असहिष्णुता की नीति और मंदिरों के तोड़े जाने के कारण हिंदू धर्म में एक नए विचार ने जन्म लिया। अब बाह्य कर्मकांडों के स्थान पर ईश्वरीय भक्ति और प्रेम पर बल दिया जाने लगा। वस्तुतः हिंदू धर्म सुधारकों ने इस्लाम के एकेश्वरवादी स्वरूप, समानता, बंधुता और इस्लाम की सहजता व रचनात्मकता से प्रभावित होकर ईश्वरीय भक्ति पर बल देना शुरू किया।

भक्ति मार्ग का बढ़ता महत्त्व

दक्षिण भारत से शुरू होकर भक्ति मार्ग की ख्याति 13वीं शताब्दी में उत्तर भारत की ओर पहुँची। वस्तुतः इस समय तक जैन व बौद्ध धर्म क्षीण हो चुका था। शैव व वैष्णव संप्रदाय में भी आडंबर व अंधविश्वास का समावेश हो चुका था। इस समय तक इस्लाम धर्म की सरलता व सहजता से प्रजा प्रभावित हो रही थी। इसी क्रम में ब्राह्मण धर्म को सरल बनाने का प्रयास किया गया। शंकर द्वारा प्रतिपादित अद्वैतवाद व ज्ञानमार्ग सामान्य जन के अनुकूल न होने के कारण शैव नयनार व वैष्णव अलवार संतों ने भक्ति पर बल देना शुरू किया। फिर उत्तर भारत के धर्म सुधारकों व संतों द्वारा भी भक्ति मार्ग को सरल व जनसामान्य के अनुकूल बनाने का प्रयास किया गया। इन संतों ने इस्लामी व्यवस्था से प्रभावित होकर धर्म सुधार के साथ-साथ समाज सुधारों को भी प्रोत्साहन दिया।

पतनोन्मुख हिन्दू समाज

भारतीय चिंतन में भक्ति मार्ग कोई नयी चीज नहीं थी। इसके आरंभिक बीज उपनिषदिक चिंतन में ही दिखाई पड़ते हैं, किंतु 13वीं शताब्दी तक आते-आते भारतीय समाज व धर्म सांस्कृतिक-धार्मिक संकटों से गुजर रहा था। अतः हिन्दू धर्म व समाज में सुधार हेतु धर्म सुधारकों द्वारा ईश्वरीय भक्ति व प्रेम पर बल दिया गया ताकि हिन्दू धर्म को इस्लाम की ही तरह सशक्त बनाया जा सके। इस प्रकार मध्यकाल में भक्ति आंदोलन ने जन आंदोलन का रूप ले लिया।

भक्ति का आरंभिक विकास

- मध्यकालीन भारत में भक्ति आंदोलन के प्रचारक आध्यात्मिक संत थे, जिनके विचार कई रूप में समान थे। उनका किसी विशेष संप्रदाय से लगाव न था। उनके अनुसार भक्ति का अर्थ ही एकाग्रचित्त और निःस्वार्थ होकर ईश्वर की पूजा करना था। उन्होंने भक्त के प्रेम की तुलना सेवक का मालिक के प्रति सेवा भाव, मित्रों के मध्य प्रेम, शिशु के प्रति माँ का वात्सल्य और अपनी प्रिया के प्रति प्रियतम के स्नेह से की थी।

अध्याय
7

नई इस्लामिक संस्कृति का आगमन (Advent of New Islamic Culture)

संस्कृति समाज और जीवन के विकास के मूल्यों की सम्यक् संरचना है। यह समाज में अंतर्निहित गुणों और उच्चतम आदर्शों के समग्र रूप का नाम है, जो उस समाज के सोचने-विचारने, कार्य करने, खाने-पीने, बोलने, नृत्य, गायन, साहित्य, कला, वास्तु (स्थापत्य) आदि में परिलक्षित होती है।

'वास्तु' शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा के शब्द 'वस्' से हुई है, जिसका आशय बसने या रहने से है। 'स्थापत्य' शब्द वास्तु का पर्यायवाची है। कला में दोनों का प्रयोग प्रायः समान अर्थ में किया गया है। कला की भाँति 'वास्तु या स्थापत्य कला' के उद्भव एवं विकास का इतिहास भी उतना ही प्राचीन है, जितना कि मानव-सभ्यता का। आदिमानव के आश्रय-स्थल प्राकृतिक गुफाएँ, शैलाश्रय तथा वृक्ष हुआ करते थे। यूरोपीय महाद्वीप के अंतर्गत स्पेन तथा फ्राँस के समीपवर्ती प्रदेश में ऐसी अनेक गुफाएँ मिली हैं, जिनमें आदिमानव के निवास करने के स्पष्ट प्रमाण मौजूद हैं। भारत में भी विभिन्न शैलाश्रयों एवं प्राकृतिक गुफाओं में मानव के रहने के साक्ष्य मिले हैं। मानव सभ्यता ने जैसे-जैसे प्रगति की, वैसे-वैसे वास्तुकला व स्थापत्य कला के रूपों में भी परिवर्तन आता गया। भारत में प्रागैतिहासिक काल से लेकर 12वीं सदी तक स्थापत्य कला के विकास में निरंतरता दिखती है। यद्यपि भारतीय कला पर विदेशी प्रभाव प्रारंभ से ही बार-बार पड़ता रहा है, तथापि कलाओं का भारतीय स्वरूप बरकरार रहा। अतः 13वीं सदी से लेकर ब्रिटिश काल के बीच भी भारतीय स्थापत्य कला ने एक नई ऊँचाई ग्रहण की।

भारतीय वास्तुकला में इंडो-इस्लामिक वास्तुकला का महत्त्वपूर्ण स्थान है, जिसमें ताजमहल, कुतुबमीनार, जामा-मस्जिद, अलाई दरवाजा, चारमीनार, अदीना-मस्जिद, हूमायूँ का मकबरा, बुलंद दरवाज़ा आदि शामिल हैं। इस दौरान साहित्यिक विकास भी हुआ जिसमें हिन्दी एवं उर्दू भाषाओं का विकास प्रमुख है।

7.1 इंडो-इस्लामिक वास्तुकला *(Indo-Islamic Architecture)*

इस्लाम का उद्भव ईसा की सातवीं शताब्दी में अरब के रेगिस्तान क्षेत्र में हुआ था। उसका प्रसार आगे ईरान, मध्य एशिया और अफगानिस्तान से लेकर समूचे एशिया उपमहाद्वीप में हुआ। उत्तरी भारत में इस्लाम का आगमन 12वीं शताब्दी में हुआ। इन देशों में मिट्टी तथा पक्की ईंटों से भवनों का निर्माण होता था, जिन्हें चिकनी टाइलों से सजाया जाता था। इन देशों में विकसित निर्माण तकनीक में नोकदार मेहराब, तहखाना, बगली डॉट और गुंबद होते थे और भवनों को अरबी सुलेखन, बेलबूटों और ज्यामितीय विन्यास से सजाया जाता था। इस्लामी वास्तुकला की यह पद्धति उन देशों में भली-भाँति प्रचलित हो गई, जहाँ इस्लाम का प्रसार हुआ था।

तुर्की आक्रमण के समय भारत में हिंदूवाद और जैनवाद पर आधारित एक जटिल सामाजिक संरचना मौजूद थी। हिंदू वास्तुकला में स्तंभों और शहतीरों का प्रयोग होता था। भवन निर्माण में पत्थरों का प्रयोग किया जाता था, जिस पर नक्काशी भारतीय शिल्पकार पिछले एक हज़ार सालों से करते आ रहे थे। विशाल मंदिरों को देवी-देवताओं की प्रतिमाओं से अलंकृत किया जाता था और मंदिरों का निर्माण पवित्र ग्रंथों में बताई गई विधि के अनुसार किया जाता था। हिंदू और मुस्लिम वास्तुकलाओं के पारस्परिक आदान-प्रदान से एक नई भारतीय-इस्लामी वास्तुकला का विकास हुआ।

भारत में मुस्लिम वास्तुकला का विकास तीन चरणों में हुआ– (i) दिल्ली सल्तनत के अंतर्गत, (ii) स्वतंत्र क्षेत्रीय शासकों के अंतर्गत तथा (iii) इन दोनों की परिणति मुगल शैली के रूप में।

इंडो-इस्लामिक वास्तुकला की विशेषताएँ *(Features of Indo-Islamic Architecture)*

इस स्थापत्य काल में भारतीय एवं ईरानी शैलियों के मिश्रण के प्रमाण मिलते हैं। साथ ही सुल्तानों, अमीरों एवं सूफियों के मकबरे की निर्माण परंपरा इसी काल में शुरू हुई।

अध्याय
8

मुगल साम्राज्य (Mughal Empire)

तैमूर ने मध्य एशिया के क्षेत्र में एक विशाल साम्राज्य का निर्माण चौदहवीं सदी में किया था, किंतु उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका साम्राज्य विघटित हो गया और उसमें अनेक छोटी-छोटी शक्तियों का उदय हुआ। तैमूर के वंशजों में बाबर भी एक था जो मुगल साम्राज्य का संस्थापक बना। बाबर का पैतृक राज्य फरगना था। मध्य एशिया के उज़बेक शासकों ने लंबे संघर्ष के बाद बाबर को फरगना से निकाल दिया। वस्तुतः शैबानी खाँ ने सर-ए-पुल के युद्ध में बाबर को पराजित कर मध्य एशिया से खदेड़ दिया था। आगे बाबर ने 1508 ई. में काबुल का राज्य जीता और कुछ समय बाद कंधार की विजय में भी सफल हुआ। इसके पश्चात् ही उसे भारत की ओर ध्यान देने का अवसर मिला।

8.1 बाबर (1526–1530 ई.) *[(Babur (1526-1530 AD)]*

1520-21 ई. में बाबर ने एक बार फिर सिंधु नदी पार की तथा भिरा एवं स्यालकोट पर विजय प्राप्त की। इस तरह हिन्दुस्तान में दाखिल होने के दरवाज़े अब उसके कब्ज़े में थे। लाहौर के शासक ने उसके सामने आत्मसमर्पण कर दिया। उसने भारत की ओर बढ़ना जारी रखा, लेकिन इसी समय कंधार में विद्रोह हो गया और वह कंधार विद्रोह-दमन हेतु कंधार चला गया। लगभग 1522 ई. के मध्य में दौलत खाँ के बेटे दिलावर खाँ के नेतृत्व में एक दूतमंडल बाबर के पास पहुँचा। उन्होंने बाबर को भारत आने के लिये आमंत्रित किया और सुझाव दिया कि उसे इब्राहीम लोदी को अपदस्थ कर देना चाहिये, क्योंकि वह अत्याचारी है और उसे अपने अमीरों का समर्थन प्राप्त नहीं है। संभवतः राणा सांगा का भी निमंत्रण बाबर के पास पहुँचा। बाबर ने 1525 ई. में पंजाब का क्षेत्र विजित करने के पश्चात् भारत अभियान प्रारंभ किया तथा अप्रैल 1526 ई. को पानीपत के युद्ध में इब्राहीम लोदी को परास्त किया जिसमें उसकी मृत्यु हो गई। पानीपत की लड़ाई को भारतीय इतिहास में निर्णायक युद्धों में गिना जाता है। इस लड़ाई से लोदी शक्ति समाप्त हो गई और दिल्ली तथा आगरा तक के क्षेत्र पर बाबर का नियंत्रण स्थापित हो गया। इस युद्ध ने बाबर की आर्थिक स्थिति को काफी सुदृढ़ किया, क्योंकि इब्राहीम लोदी ने आगरा (राजधानी) में जो दौलत जमा कर रखी थी, उस पर बाबर का कब्ज़ा हो गया था।

पानीपत की विजय के उपरांत बाबर के जीवन में एक नया अध्याय शुरू हुआ। अब उसकी राजनीतिक गतिविधियों का केंद्र मध्य एशिया से हटकर उत्तरी भारत में स्थापित हो गया था। पानीपत की सफलता ने बाबर को भारतीय शासकों की रण पद्धति की कमज़ोरियों से परिचित करवाया और उसके आत्मविश्वास को भी बढ़ाया। इससे उत्तरी भारत में उसकी सत्ता स्थापित हुई, लेकिन अभी भी लोदियों का प्रभाव गुजरात, बिहार एवं बंगाल पर था, जिस पर अभी भी उनकी शक्ति बनी हुई थी।

पानीपत की विजय के तुरंत बाद बाबर को 1527 ई. में राजपूतों के साथ खानवा की लड़ाई लड़नी पड़ी। राजपूतों द्वारा इस अभियान का मुख्य कारण बाबर का भारत में रहने का निश्चय था। राणा सांगा की धारणा थी कि बाबर भी अन्य विदेशी आक्रमणकारियों की भाँति देश को लूटकर वापस चला जाएगा। संभवतः, इसी कारण उसने इब्राहीम लोदी के विरुद्ध बाबर को सहायता देने का आश्वासन दिया था। परंतु जब बाबर ने भारत में रहने का निश्चय किया, तब उसने एक विदेशी की तुलना में स्थानीय अफगानों को अधिक ठीक समझा। इसीलिये उसने हसन खाँ मेवाती से बाबर को भारत से बाहर निकालने के लिये सहायता मांगी, महमूद लोदी को दिल्ली का बादशाह स्वीकार किया और आलम खाँ लोदी को अपने यहाँ शरण दी। राजपूतों ने बयाना और आगरा को जीतने के उद्देश्य से आगे बढ़ना आरम्भ किया। हसन खाँ मेवाती और महमूद भी उनसे आ मिले। बाबर ने जो उस समय आगरा में था, इस युद्ध के लिये पूर्ण तैयारी की। बाबर ने 1527 ई. को इस युद्ध को 'जिहाद' (इस्लाम की रक्षा के लिये धर्मयुद्ध) घोषित कर दिया। उसके इस कार्य का उचित एवं अपेक्षित प्रभाव पड़ा। 16 मार्च, 1527 ई. को फतेहपुर सीकरी से 10 मील दूर खानवा नामक स्थान पर दोनों सेनाओं के मध्य मुकाबला हुआ। इस युद्ध में बाबर की विजय हुई। यद्यपि बाबर को खानवा की लड़ाई से कोई नया क्षेत्र प्राप्त नहीं हुआ और न कोई विशेष आर्थिक लाभ ही हुआ, फिर भी इस युद्ध का राजनीतिक परिणाम निर्णायक था। इस युद्ध के पश्चात् मुगल साम्राज्य की स्थापना पूरी तरह से हो गई।

अध्याय
9

मराठा साम्राज्य
(Maratha Empire)

मुगल साम्राज्य के पतन के दौरान ही मराठा शक्ति का उदय हुआ। मराठों के उदय में सर्वाधिक योगदान क्षेत्र-विशेष की भौगोलिक परिस्थितियों का था। मराठों का मूल निवास-क्षेत्र मराठवाड़ा तीन भागों में विभक्त था। पहला सह्याद्रि पर्वत से दक्षिण तटवर्ती भाग, दूसरा सह्याद्रि का पर्वतीय क्षेत्र और तीसरा पूर्वी मैदान का पहाड़ी एवं जंगली क्षेत्र। सह्याद्रि के तटवर्ती क्षेत्र को कोंकण एवं पर्वतीय क्षेत्र को मावला के नाम से जाना जाता है। यहाँ कृषि कार्य कठिन था। प्राकृतिक परिस्थितियों के कारण मराठों में साहस, कठोर परिश्रम, आत्मसंयम जैसे गुणों का विकास हुआ। अपनी आजीविका को चलाने के लिये मराठे लूट-पाट का सहारा लेते थे। मराठों में एकता की भावना जगाने में मराठी भाषा का सर्वाधिक योगदान रहा।

भक्ति आंदोलन के संतों जैसे ज्ञानेश्वर, एकनाथ, तुकाराम और रामदास की शिक्षाओं ने मराठा राज्य के उदय में सहयोग दिया। ये संत जाति प्रथा का विरोध करते थे और स्थानीय मराठी भाषा में उपदेश देते थे। शिवाजी के गुरु रामदास ने महाराष्ट्र धर्म को प्रचारित किया।

मोडी लिपि

मोडी उस लिपि का नाम है, जिसका प्रयोग सन् 1950 तक महाराष्ट्र की प्रमुख भाषा मराठी को लिखने के लिये किया जाता था। मोडी शब्द की उत्पत्ति फारसी के शब्द शिकस्त के अनुवाद से हुई है, जिसका अर्थ होता है 'तोड़ना या मोड़ना'। इसे हेमादपंत (या हेमाद्री पंडित) ने महादेव यादव और रामदेव यादव के शासनकाल के दौरान (1260-1309 ई.) विकसित किया था।

दक्षिण की राजनीतिक स्थितियों ने भी मराठों के उत्थान में सहयोग दिया। बहमनी राज्य के विखंडन तक मराठे अनुभवी लड़ाकू जाति के रूप में ख्याति प्राप्त कर चुके थे। सर्वप्रथम मुगलों के विरुद्ध संघर्ष में अहमदनगर के प्रधानमंत्री मलिक अंबर ने मराठों का सहयोग प्राप्त किया तथा मराठों को अपनी सेना में शामिल किया। शिवाजी के पिता शाहजी भोंसले अहमदनगर की सेना में शामिल हुए फिर वह बीजापुर के सूबेदार हो गए। 1620 ई. में शाहजी जहाँगीर की सेवा में चले गए। इस प्रकार जहाँगीर के काल में मराठे पहली बार मुगलों की सेवा में आए। मुगल बादशाह शाहजहाँ ने शाहजी को 5000 का मनसब प्रदान किया, परंतु शीघ्र ही शाहजी ने मुगलों का साथ छोड़ दिया और पुनः अहमदनगर आ गए। जनवरी 1664 ई. में शाहजी की मृत्यु हो गई।

9.1 उदय के कारण *(Causes of Rise)*

मध्यकालीन भारतीय इतिहास में मराठा साम्राज्य का उदय कोई एक घटना नहीं, बल्कि यह विभिन्न कारकों का सम्मिलित प्रभाव था। उन कारकों में जहाँ मराठा क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति तथा यहाँ के भक्ति आंदोलन तथा औरंगज़ेब की नीतियों का योगदान रहा, वहीं शिवाजी के चामत्कारिक व्यक्तित्व ने भी इसके उदय में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

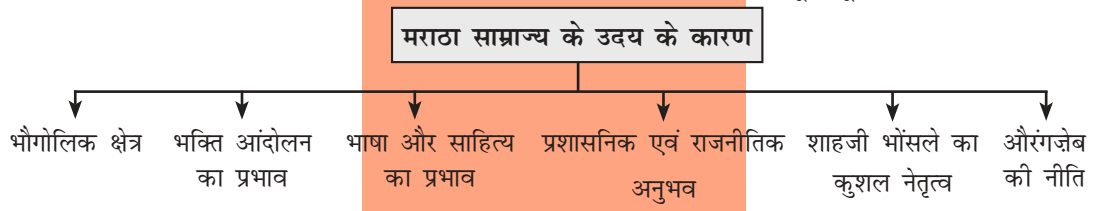

भौगोलिक क्षेत्र *(Geographical Region)*

एम.जी. रानाडे ने अपनी पुस्तक **'द राइज़ ऑफ मराठा पावर'** (The rise of Maratha power) में मराठवाड़ा के ऊबड़-खाबड़ भौगोलिक क्षेत्र को उसके उदय का प्रधान कारण माना है।

मराठों का भौगोलिक क्षेत्र पर्वतों से घिरा हुआ था जिससे उनको प्राकृतिक सुरक्षा प्राप्त होती थी। सह्याद्री, सतपुड़ा तथा विंध्य की पर्वत शृंखलाओं और नर्मदा एवं ताप्ती नदियों से घिरे होने के कारण यह क्षेत्र बाह्य आक्रमणों से अधिक सुरक्षित था।

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी तथा फ्लोचार्ट का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS

YouTube Drishti IAS

drishtiias

drishtithevisionfoundation